उत्कृष्ट जीवनी ग्रंथ

नरेन्द्र मोदी

चाय बेचने वाले से भारत के प्रधानमंत्री तक का सफर

लेखक: आकाश गुप्ता

संस्करण: 2026

लेखक परिचय

आकाश गुप्ता भारत के एक प्रतिष्ठित राजनीतिक विश्लेषक, समकालीन इतिहासकार और लेखक हैं। उन्होंने भारतीय राजनीति, नेतृत्व के सिद्धांतों और आधुनिक इतिहास पर व्यापक शोध किया है। विभिन्न राष्ट्रीय समाचार पत्रों और शोध पत्रिकाओं में उनके लेख नियमित रूप से प्रकाशित होते रहते हैं। यह जीवनी उनके वर्षों के गहन अनुसंधान, साक्षात्कारों और ऐतिहासिक दस्तावेजों के विश्लेषण का परिणाम है, जो पाठकों के समक्ष एक निष्पक्ष, प्रेरणादायक और तथ्य-आधारित वृत्तचित्र (Documentary) के रूप में प्रस्तुत की गई है।

प्रस्तावना (Preface)

भारतीय लोकतंत्र की यह सबसे बड़ी सुंदरता और शक्ति है कि यहाँ सुदूर गाँव का, एक अत्यंत साधारण पृष्ठभूमि का व्यक्ति भी अपनी निष्ठा, कड़े परिश्रम और अटूट संकल्प के बल पर राष्ट्र के सर्वोच्च पद तक पहुँच सकता है। नरेन्द्र दामोदरदास मोदी की जीवन यात्रा इसी लोकतांत्रिक गौरव का जीवंत प्रमाण है।

यह पुस्तक केवल एक राजनेता की जीवनी नहीं है, बल्कि यह स्वतंत्र भारत के सामाजिक-राजनीतिक परिवर्तन का एक ऐतिहासिक दस्तावेज है। महेसाना जिले के एक छोटे से कस्बे वडनगर की तंग गलियों से लेकर नई दिल्ली के लुटियंस जोन और 'कल्याण मार्ग' (7, लोक कल्याण मार्ग) तक का यह सफर असाधारण संघर्षों, कठोर निर्णयों, अनगिनत विवादों और अद्वितीय सफलताओं से भरा हुआ है।

इस जीवनी को लिखते समय निष्पक्षता, ऐतिहासिक सत्यता और विवरणात्मक गहराई का विशेष ध्यान रखा गया है। इसका उद्देश्य पाठकों, विशेषकर युवाओं और प्रतियोगी परीक्षाओं के अभ्यर्थियों को एक ऐसा व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करना है, जिससे वे समकालीन भारत की राजनीतिक दिशा और एक वैश्विक नेता के निर्माण की प्रक्रिया को समग्रता में समझ सकें।

विषय-सूची (Table of Contents)

अध्याय 1 – जन्म और परिवार

वडनगर की मिट्टी और पारिवारिक पृष्ठभूमि

नरेन्द्र दामोदरदास मोदी का जन्म 17 सितंबर 1950 को बॉम्बे राज्य (वर्तमान गुजरात) के महेसाना जिले के एक प्राचीन और ऐतिहासिक कस्बे वडनगर में हुआ था। वडनगर प्राचीन काल में एक समृद्ध व्यापारिक और सांस्कृतिक केंद्र रहा था, जिसका उल्लेख चीनी यात्री ह्वेनसांग के यात्रा वृत्तांतों में भी मिलता है। इसी ऐतिहासिक भूमि पर एक अत्यंत साधारण और आर्थिक रूप से कमजोर परिवार में इस बालक का जन्म हुआ, जो आगे चलकर आधुनिक भारत की नियति को बदलने वाला था।

उनका परिवार 'घांची' (तेली) समुदाय से संबंध रखता था, जिसे भारत सरकार द्वारा अन्य पिछड़ा वर्ग (OBC) के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है। उनके पिता का नाम दामोदरदास मूलचंद मोदी और माता का नाम हीराबेन मोदी था। दामोदरदास एक सीधे, अनुशासित और स्वाभिमानी व्यक्ति थे, जो वडनगर रेलवे स्टेशन पर एक छोटी सी चाय की दुकान चलाकर अपने परिवार का भरण-पोषण करते थे। माता हीराबेन एक अत्यंत सरल, धार्मिक और कर्मठ महिला थीं, जिन्होंने विपरीत आर्थिक परिस्थितियों के बावजूद अपने बच्चों को उच्च संस्कार और अनुशासन की शिक्षा दी।

प्रारंभिक जीवन के संघर्ष

नरेन्द्र मोदी अपने माता-पिता की छह संतानों में से तीसरे थे। उनका घर वडनगर के एक संकीर्ण और तंग मोहल्ले में स्थित था, जो मिट्टी और पत्थरों से बना एक छोटा सा कमरा मात्र था। उस घर में प्राकृतिक रोशनी और हवा का भी अभाव था। ऐसी तंग जगह में पूरे परिवार का गुजर-बसर करना एक कठिन चुनौती थी। बचपन से ही नरेन्द्र ने गरीबी को बेहद करीब से देखा और महसूस किया था। घर में सुख-सुविधाओं का कोई नामोनिशान नहीं था, यहाँ तक कि रात में पढ़ाई करने के लिए मिट्टी के तेल की ढिबरी का सहारा लेना पड़ता था। उनकी माता दूसरों के घरों में बर्तन मांजने और कुएं से पानी भरने जैसा कठिन श्रम करती थीं ताकि परिवार को दो वक्त का भोजन मिल सके। यह प्रारंभिक संघर्ष ही था जिसने नरेन्द्र मोदी के भीतर विपरीत परिस्थितियों से लड़ने का अटूट साहस और समाज के सबसे अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति के प्रति संवेदनशीलता पैदा की।

अध्याय 2 – बचपन और संघर्ष

वडनगर रेलवे स्टेशन और चाय की दुकान

नरेन्द्र मोदी के बचपन की सबसे अमिट और प्रभावशाली गाथा वडनगर रेलवे स्टेशन से जुड़ी हुई है। स्कूल जाने से पहले और वहाँ से लौटने के बाद, वे अपने पिता की मदद के लिए रेलवे स्टेशन पर स्थित चाय की दुकान पर जाते थे। जब भी कोई ट्रेन स्टेशन पर रुकती, नन्हा नरेन्द्र हाथ में केतली और कांच के गिलास लेकर बोगियों में जाता और 'चाय... गरम चाय' की आवाज लगाता था। यात्रियों की आवाजाही, उनकी विविध भाषाएँ और उनके व्यवहार को देखना नरेन्द्र के लिए व्यावहारिक शिक्षा का पहला माध्यम बना। कई बार, जब उनके पिता बीमार होते, तो पूरी दुकान का जिम्मा नरेन्द्र के कंधों पर आ जाता था। इस अनुभव ने उन्हें बचपन में ही श्रम की महत्ता, समय का प्रबंधन और मानव स्वभाव को समझने की गहरी अंतर्दृष्टि प्रदान की।

> "बचपन के संघर्षों ने मुझे जीवन को जीना सिखाया, किताबों से ज्यादा मुझे रेलवे स्टेशन के प्लेटफॉर्म और समाज की वास्तविक पाठशाला ने शिक्षित किया।" - नरेन्द्र मोदी

स्कूली शिक्षा और देशभक्ति का बीजारोपण

नरेन्द्र मोदी की प्रारंभिक शिक्षा वडनगर के ही स्थानीय स्कूल में हुई। वे पढ़ाई में औसत लेकिन वाद-विवाद, नाटक और खेलकूद में अत्यंत सक्रिय थे। उनके शिक्षकों के अनुसार, उनमें नेतृत्व करने का एक जन्मजात गुण था। बचपन में ही उनके भीतर देशभक्ति की भावना कूट-कूट कर भरी थी। 1962 के भारत-चीन युद्ध और 1965 के भारत-पाकिस्तान युद्ध के दौरान, जब सैनिक वडनगर स्टेशन से गुजरते थे, तो नरेन्द्र अपनी चाय की दुकान से दौड़कर सैनिकों की सेवा के लिए पहुँच जाते थे और उन्हें मुफ्त में चाय-नाश्ता कराते थे। बचपन की एक और प्रसिद्ध घटना उनके अदम्य साहस को दर्शाती है, जब वे वडनगर के शर्मिष्ठा तालाब से एक छोटे मगरमच्छ के बच्चे को पकड़कर घर ले आए थे, जिसे बाद में उनकी माता के समझाने पर उन्होंने वापस तालाब में छोड़ दिया। यह घटना उनके निडर और साहसी चरित्र का प्रारंभिक संकेत थी।

अध्याय 3 – RSS से जुड़ाव

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में प्रवेश और अनुशासन

मात्र आठ वर्ष की अल्पायु में नरेन्द्र मोदी का परिचय राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (RSS) से हुआ। वे वडनगर में संघ की स्थानीय 'बाल शाखा' में जाने लगे। यहाँ उन्हें अनुशासन, शारीरिक व्यायाम, राष्ट्रवाद और सामूहिक कार्य की प्रारंभिक शिक्षा मिली। संघ के संस्कारों ने उनके मानस पटल पर एक गहरा प्रभाव छोड़ा। युवावस्था में कदम रखते ही उनका झुकाव वैराग्य और अध्यात्म की ओर होने लगा। हाईस्कूल की शिक्षा पूरी करने के बाद, वे अचानक अपना घर छोड़कर भारत भ्रमण पर निकल गए। इस दौरान उन्होंने ऋषिकेश, हिमालय, रामकृष्ण मिशन और स्वामी विवेकानंद के आश्रमों में समय बिताया। इस आध्यात्मिक यात्रा ने उनके जीवन के दृष्टिकोण को पूरी तरह बदल दिया और वे एक निस्वार्थ राष्ट्रसेवक के रूप में वापस लौटे।

प्रचारक के रूप में कठोर जीवन

1971 में, भारत-पाकिस्तान युद्ध के बाद, नरेन्द्र मोदी आधिकारिक तौर पर अहमदाबाद आ गए और संघ के पूर्णकालिक कार्यकर्ता (प्रचारक) बन गए। अहमदाबाद के 'हेडगेवार भवन' (संघ कार्यालय) में रहते हुए उन्होंने अपने वरिष्ठों की सेवा से लेकर कार्यालय की साफ-सफाई, झाड़ू लगाने और चाय बनाने तक के सारे काम पूरी निष्ठा से किए। संघ के वरिष्ठ नेता लक्ष्मणराव इनामदार, जिन्हें 'वकील साहब' के नाम से जाना जाता था, नरेन्द्र मोदी के मुख्य मार्गदर्शक और गुरु बने। मोदी की अद्भुत संगठनात्मक क्षमता, तीक्ष्ण बुद्धि और अथक परिश्रम को देखते हुए उन्हें जल्द ही संघ में महत्वपूर्ण जिम्मेदारियाँ सौंपी जाने लगीं। इस दौरान उन्होंने गुजरात के कोने-कोने का दौरा किया और जमीनी स्तर पर लोगों की समस्याओं और संघ के नेटवर्क को गहराई से समझा।

अध्याय 4 – राजनीति में प्रवेश

आपातकाल (1975) और भूमिगत संघर्ष

नरेन्द्र मोदी के राजनीतिक और संगठनात्मक जीवन की सबसे बड़ी परीक्षा 1975 में आई, जब तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने देश में आपातकाल (Emergency) की घोषणा कर दी। RSS पर प्रतिबंध लगा दिया गया और विपक्षी नेताओं को जेलों में ठूंस दिया गया। इस

संकट के समय नरेन्द्र मोदी को 'गुजरात लोक संघर्ष समिति' का महासचिव बनाया गया। उन्होंने गिरफ्तारी से बचने के लिए भेष बदलने की कला सीखी। वे कभी सरदारजी (सिख) तो कभी संन्यासी का रूप धारण कर देश भर के नेताओं तक गुप्त सूचनाएँ, साहित्य और धन पहुँचाते थे। आपातकाल के दौरान उनके द्वारा किए गए इस साहसिक और रणनीतिक कार्य ने संघ और अन्य राजनीतिक दलों के शीर्ष नेताओं का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया। इस अनुभव ने उन्हें सिखाया कि संकट के समय किस प्रकार धैर्य और गोपनीयता के साथ काम किया जाता है।

महत्वपूर्ण ऐतिहासिक तथ्य

आपातकाल के दौरान नरेन्द्र मोदी ने "संघर्ष मां गुजरात" (गुजरात में संघर्ष) नामक एक पुस्तक भी लिखी, जिसमें उन्होंने उस दौर के भूमिगत आंदोलनों का सजीव और विस्तृत वर्णन किया है।

भाजपा में स्थानांतरण और प्रारंभिक राजनीतिक कार्य

आपातकाल की समाप्ति और जनता पार्टी के प्रयोग के बाद, 1980 में भारतीय जनता पार्टी (BJP) का गठन हुआ। संघ के निर्णय के अनुसार, 1985 में नरेन्द्र मोदी को RSS से भाजपा में स्थानांतरित कर दिया गया। यह उनके सक्रिय राजनीतिक जीवन की शुरुआत थी। 1987 में उन्हें गुजरात भाजपा का संगठन सचिव (Organization Secretary) नियुक्त किया गया। अपनी नियुक्ति के तुरंत बाद, उन्होंने अहमदाबाद नगर निगम चुनाव में भाजपा की ऐतिहासिक जीत सुनिश्चित की। मोदी ने पारंपरिक राजनीति से हटकर आधुनिक प्रबंधन तकनीकों, डेटा विश्लेषण और बूथ-स्तरीय प्रबंधन की शुरुआत की, जिसने गुजरात में भाजपा को एक अपराजेय शक्ति बनाने की नींव रखी।

अध्याय 5 – गुजरात की राजनीति

गुजरात भाजपा का उदय और सांगठनिक कौशल

1980 के दशक के उत्तरार्ध और 1990 के दशक की शुरुआत में गुजरात की राजनीति में भारी उथल-पुथल चल रही थी। नरेन्द्र मोदी ने कांग्रेस के पारंपरिक 'KHAM' (क्षत्रिय, हरिजन, आदिवासी, मुस्लिम) सोशल इंजीनियरिंग कार्ड का मुकाबला करने के लिए एक व्यापक हिंदुत्व और विकासोन्मुखी सांगठनिक ढांचा तैयार किया। उन्होंने 1987 की 'न्याय यात्रा' और 1989 की 'लोक शक्ति यात्रा' का सफल संयोजन किया। उनके कुशल नेतृत्व का सबसे बड़ा प्रमाण 1990 के विधानसभा चुनावों में मिला, जहाँ भाजपा ने अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की और चिमनभाई पटेल की सरकार के साथ गठबंधन का हिस्सा बनी।

राष्ट्रीय क्षितिज पर चमक और रणनीतिक भूमिका

नरेन्द्र मोदी की सांगठनिक क्षमता केवल गुजरात तक सीमित नहीं रही। 1990 में लालकृष्ण आडवाणी की 'सोमनाथ से अयोध्या राम रथ यात्रा' और 1991-92 में मुरली मनोहर जोशी की 'कन्याकुमारी से कश्मीर एकता यात्रा' के मुख्य संयोजक और रणनीतिकार नरेन्द्र मोदी ही थे। श्रीनगर के लाल चौक पर आतंकवादियों की धमकियों के बीच तिरंगा फहराने के मिशन को सफलतापूर्वक प्रबंधित करके मोदी ने अपनी राष्ट्रीय पहचान बनाई। इसके बाद, 1995 में उन्हें भाजपा का राष्ट्रीय सचिव और 1998 में राष्ट्रीय संगठन महामंत्री बनाया गया। इस दौरान उन्होंने हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर और पंजाब जैसे महत्वपूर्ण राज्यों में पार्टी को मजबूत करने में केंद्रीय भूमिका निभाई।

अध्याय 6 – गुजरात के मुख्यमंत्री

सत्ता का हस्तांतरण: मुख्यमंत्री पद की शपथ

साल 2001 में गुजरात एक भीषण संकट से गुजर रहा था। जनवरी 2001 में आए विनाशकारी भुज भूकंप के कारण जान-माल का भारी नुकसान हुआ था, और तत्कालीन मुख्यमंत्री केशुभाई पटेल के प्रशासन पर पुनर्वास कार्यों में ढिलाई और अकुशलता के आरोप लग रहे थे। भाजपा आलाकमान ने राज्य में नेतृत्व परिवर्तन का साहसिक निर्णय लिया। अक्टूबर 2001 में, प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने नरेन्द्र मोदी को दिल्ली बुलाया और गुजरात की कमान संभालने का निर्देश दिया। 7 अक्टूबर 2001 को नरेन्द्र मोदी ने पहली बार गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ली। यह पहली बार था जब उन्होंने सीधे किसी प्रशासनिक पद को संभाला था, बिना किसी पूर्व विधायी अनुभव के।

प्रशासनिक सुधार और पुनरुद्धार

मुख्यमंत्री बनते ही मोदी ने सबसे पहले भूकंप प्रभावित कच्छ और भुज के पुनर्वास कार्यों को युद्ध स्तर पर गति दी। उन्होंने 'कच्छ का कायाकल्प' करते हुए उसे एक प्रमुख औद्योगिक और पर्यटन केंद्र में बदल दिया। उन्होंने नौकरशाही को जवाबदेह बनाने के लिए 'स्वागत' (SWAGAT) ऑनलाइन शिकायत निवारण प्रणाली शुरू की, जिसके माध्यम से आम नागरिक सीधे मुख्यमंत्री से अपनी समस्याएं साझा कर सकते थे। उन्होंने सरकारी फाइलों के त्वरित निपटारे के लिए 'फाइव-डे वीक' और डिजिटल गवर्नेंस की शुरुआत की, जिसने गुजरात के सुस्त पड़े प्रशासनिक तंत्र में एक नई ऊर्जा फूंक दी।

अध्याय 7 – 2002 के गुजरात दंगे और कानूनी जांच

गोधरा कांड और उसके बाद की त्रासदी

27 फरवरी 2002 को गुजरात के गोधरा रेलवे स्टेशन पर साबरमती एक्सप्रेस के S-6 कोच को एक उन्मादी भीड़ द्वारा आग के हवाले कर दिया गया, जिसमें अयोध्या से लौट रहे 59 कारसेवकों की दर्दनाक मौत हो गई। इस जघन्य घटना की प्रतिक्रिया स्वरूप पूरे गुजरात में बड़े पैमाने पर सांप्रदायिक दंगे भड़क उठे। इन दंगों में सरकारी आंकड़ों के अनुसार 1,000 से अधिक लोग मारे गए, जिनमें अधिकांश अल्पसंख्यक समुदाय के थे। बतौर मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी पर विपक्ष, मीडिया और अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार संगठनों द्वारा प्रशासनिक विफलता और दंगों को न रोक पाने के गंभीर आरोप लगाए गए। यह उनके राजनीतिक जीवन का सबसे अंधकारमय और विवादास्पद दौर था, जिसने उनकी छवि को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारी नुकसान पहुँचाया।

एसआईटी (SIT) जांच और न्यायालय का फैसला

दंगों के बाद मोदी को चौतरफा राजनीतिक हमलों और इस्तीफे की मांगों का सामना करना पड़ा। भारत के सर्वोच्च न्यायालय (Supreme Court) के निर्देश पर दंगों की निष्पक्ष जांच के लिए एक विशेष जांच दल (SIT) का गठन किया गया। एसआईटी ने नरेन्द्र मोदी से कई घंटों तक गहन पूछताछ की। वर्षों की लंबी और सूक्ष्म कानूनी प्रक्रिया, गवाहों के बयानों और साक्ष्यों के परीक्षण के बाद, एसआईटी ने निष्कर्ष निकाला कि मुख्यमंत्री स्तर पर दंगों को भड़काने या पुलिस को निष्क्रिय रहने का कोई भी निर्देश देने का कोई सबूत नहीं मिला। दिसंबर 2013 में, अहमदाबाद की एक अदालत ने एसआईटी की क्लोजर रिपोर्ट को स्वीकार करते हुए नरेन्द्र मोदी को क्लीन चिट दे दी। अंततः, 2022 में सर्वोच्च न्यायालय ने भी इस क्लीन चिट को बरकरार रखते हुए उन सभी आरोपों को राजनीति से प्रेरित और निराधार खारिज कर दिया, जिससे उनके दामन पर लगा यह सबसे बड़ा दाग कानूनी रूप से पूरी तरह धुल गया।

अध्याय 8 – “गुजरात मॉडल” और विकास नीति

वाइब्रेंट गुजरात और औद्योगिक क्रांति

दंगों के बाद की नकारात्मक छवि को बदलने और राज्य को प्रगति के पथ पर ले जाने के लिए नरेन्द्र मोदी ने 'विकास' को अपना मुख्य हथियार बनाया। 2003 में उन्होंने 'वाइब्रेंट गुजरात ग्लोबल इंवेस्टर समिट' (Vibrant Gujarat) की शुरुआत की। इस दूरदर्शी पहल का उद्देश्य वैश्विक और राष्ट्रीय उद्योगपतियों को गुजरात में निवेश करने के लिए आकर्षित करना था। 'रेड टेप' (लालफीताशाही) को 'रेड कार्पेट' में बदलते हुए मोदी ने उद्योग स्थापना के लिए सिंगल-विंडो क्लीयरेंस और पारदर्शी नीतियां लागू कीं। इसका सबसे बड़ा उदाहरण 2008 में तब दिखा, जब पश्चिम बंगाल के सिंगूर में विवाद के कारण टाटा मोटर्स को अपनी 'नैनो' कार परियोजना बंद करनी पड़ी। मोदी ने रतन टाटा को सिर्फ एक एसएमएस (SMS) भेजा - "गुजरात में आपका स्वागत है", और मात्र कुछ ही दिनों में साणंद में भूमि और सभी अनुमतियां आवंटित कर दीं। इस घटना ने गुजरात को भारत के ऑटोमोबाइल हब के रूप में स्थापित कर दिया।

बुनियादी ढांचा और कृषि में अभूतपूर्व सुधार

गुजरात मॉडल केवल उद्योगों तक सीमित नहीं था, बल्कि इसका मुख्य आधार सुदृढ़ बुनियादी ढांचा था। 'ज्योतिर्ग्राम योजना' के माध्यम से मोदी सरकार ने गुजरात के सभी 18,000 गांवों को 24 घंटे निर्बाध बिजली की आपूर्ति सुनिश्चित की, जो उस समय भारत के किसी भी राज्य के लिए एक सपना था। सुजलाम सुफलाम योजना और नर्मदा नहर नेटवर्क का विस्तार करके सौराष्ट्र और कच्छ के सूखे और रेगिस्तानी इलाकों तक पानी पहुँचाया गया। ड्रिप इरिगेशन (टपक सिंचाई) और मृदा स्वास्थ्य कार्ड (Soil Health Card) जैसी नवीन तकनीकों को बढ़ावा देने के कारण गुजरात की कृषि विकास दर, जो कभी नकारात्मक थी, बढ़कर दहाई के आंकड़े (10% से अधिक) को छूने लगी।

अध्याय 9 – 2014 का ऐतिहासिक लोकसभा चुनाव

प्रधानमंत्री पद की उम्मीदवारी और देशव्यापी अभियान

गुजरात में लगातार तीन विधानसभा चुनाव (2002, 2007, 2012) जीतने और विकास के नए कीर्तिमान स्थापित करने के बाद, नरेन्द्र मोदी राष्ट्रीय स्तर पर बदलाव का चेहरा बन चुके थे। सितंबर 2013 में, भाजपा संसदीय बोर्ड ने लालकृष्ण आडवाणी जैसे वरिष्ठ नेताओं की झिझक के बावजूद नरेन्द्र मोदी को 2014 के लोकसभा चुनाव के लिए प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार घोषित कर दिया। मोदी ने पूरे देश में एक अभूतपूर्व और थका देने वाला चुनावी अभियान शुरू किया। उन्होंने देश के कोने-कोने में लगभग 437 बड़ी रैलियां कीं और 3 लाख किलोमीटर से अधिक की यात्रा की। उनके भाषणों में तत्कालीन संप्रदायवादी राजनीति, नीतिगत पंगुता (Policy Paralysis) और कांग्रेस सरकार के भ्रष्टाचार पर तीखे प्रहार होते थे, जबकि दूसरी ओर वे देश की जनता को प्रगति और राष्ट्रवाद की एक नई उम्मीद देते थे।

> "अच्छे दिन आने वाले हैं... देश नहीं झुकने दूंगा, देश नहीं रुकने दूंगा।" - 2014 के चुनाव का मुख्य उद्घोष

सोशल मीडिया और तकनीकी नवाचार

2014 का चुनाव भारतीय राजनीतिक इतिहास का पहला डिजिटल चुनाव था। नरेन्द्र मोदी और उनकी रणनीतिक टीम ने सोशल मीडिया (ट्विटर, फेसबुक) का उपयोग करके सीधे देश के युवाओं से संवाद स्थापित किया। चुनाव प्रचार में 'चाय पे चर्चा' और 'थ्री-डी होलोग्राफिक रैलियों' (3D Hologram Rallies) जैसी अत्याधुनिक तकनीकों का प्रयोग किया गया, जिसके माध्यम से मोदी एक ही समय में देश के

दर्जनों अलग-अलग स्थानों पर सजीव भाषण देते हुए दिखाई देते थे। इस अभिनव प्रयोग ने चुनाव प्रचार के पारंपरिक तौर-तरीकों को पूरी तरह बदल दिया और युवाओं के बीच उनके प्रति एक जबरदस्त क्रेज पैदा कर दिया। 16 मई 2014 को जब नतीजे आए, तो भाजपा ने अकेले अपने दम पर 282 सीटें जीतकर पूर्ण बहुमत प्राप्त किया, जो पिछले 30 वर्षों में किसी भी राजनीतिक दल द्वारा हासिल की गई सबसे बड़ी और ऐतिहासिक जीत थी।

अध्याय 10 – भारत के प्रधानमंत्री: प्रथम कार्यकाल

"न्यूनतम सरकार, अधिकतम शासन" (Minimum Government, Maximum Governance)

26 मई 2014 को नरेन्द्र मोदी ने भारत के 15वें प्रधानमंत्री के रूप में शपथ ली। इस शपथ ग्रहण समारोह में सार्क (SAARC) देशों के राष्ट्राध्यक्षों को आमंत्रित करके उन्होंने पहले ही दिन अपनी कूटनीतिक दूरदर्शिता का परिचय दिया। प्रधानमंत्री पद संभालते ही उन्होंने प्रशासनिक कार्यसंस्कृति में आमूलचूल परिवर्तन किए। उन्होंने नौकरशाही में समयबद्धता, फाइलों के डिजिटल निस्तारण और मंत्रालयों के बीच के अवरोधों (Silos) को खत्म करने पर जोर दिया। उनका मुख्य मंत्र था - 'सबका साथ, सबका विकास'।

लोक कल्याणकारी योजनाएं

अपने पहले कार्यकाल में मोदी सरकार ने सीधे गरीब और वंचित तबके को लक्षित करते हुए कई क्रांतिकारी सामाजिक-आर्थिक योजनाएं शुरू कीं:

- **प्रधानमंत्री जन धन योजना:** इसके तहत देश के करोड़ों गरीबों के शून्य शेष (Zero Balance) पर बैंक खाते खोले गए, जिसने वित्तीय समावेशन की दुनिया की सबसे बड़ी क्रांति को जन्म दिया।
- **स्वच्छ भारत अभियान:** 2 अक्टूबर 2014 को शुरू किए गए इस जन आंदोलन ने देश में स्वच्छता के प्रति दृष्टिकोण बदल दिया और करोड़ों ग्रामीण घरों में शौचालयों का निर्माण सुनिश्चित किया।
- **प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना:** गरीब महिलाओं को मुफ्त एलपीजी (LPG) गैस कनेक्शन प्रदान कर उनके स्वास्थ्य की रक्षा की गई और धुएं से मुक्ति दिलाई गई।

अध्याय 11 – ऐतिहासिक एवं कड़े निर्णय

विमुद्रीकरण (Demonetization - नोटबंदी)

8 नवंबर 2016 की रात 8 बजे, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने राष्ट्र के नाम एक लाइव संबोधन में एक अत्यंत चौंकाने वाला और साहसिक निर्णय लिया। उन्होंने आधी रात से 500 और 1,000 रुपये के तत्कालीन नोटों के चलन को कानूनी रूप से अमान्य (Demonetized) घोषित कर दिया। इस निर्णय का मुख्य उद्देश्य काले धन पर प्रहार करना, जाली नोटों के कारोबार को नष्ट करना और आतंकवाद व नक्सलवाद की फंडिंग की कमर तोड़ना था। इस कदम से देश भर में कुछ समय के लिए बैंकों के बाहर लंबी कतारें लगीं और अर्थव्यवस्था में नकदी का संकट पैदा हुआ, जिसकी विपक्ष ने तीखी आलोचना की। परंतु, इस निर्णय ने भारतीय अर्थव्यवस्था को औपचारिक (Formalize) बनाने और डिजिटल भुगतान (Digital India) को बढ़ावा देने में एक उत्प्रेरक का कार्य किया।

वस्तु एवं सेवा कर (GST) और अनुच्छेद 370 का उन्मूलन

1 जुलाई 2017 की मध्यरात्रि को संसद के ऐतिहासिक सेंट्रल हॉल से मोदी सरकार ने 'एक देश, एक कर' के सिद्धांत पर आधारित वस्तु एवं सेवा कर (GST) को लागू किया, जिसने आजादी के बाद के सबसे बड़े अप्रत्यक्ष कर सुधार को अमलीजामा पहनाया। इसके बाद, अपने दूसरे कार्यकाल की शुरुआत में, 5 अगस्त 2019 को मोदी सरकार ने एक और ऐतिहासिक और साहसिक कदम उठाते हुए जम्मू-कश्मीर को विशेष दर्जा देने वाले संविधान के 'अनुच्छेद 370' और 35A को निरस्त कर दिया। राज्य को दो केंद्र शासित प्रदेशों (जम्मू-कश्मीर और लद्दाख) में विभाजित कर दिया गया। इस निर्णय ने कश्मीर को पूरी तरह से भारत की मुख्यधारा और भारतीय संविधान के अंतर्गत ला खड़ा किया, जिससे दशकों पुरानी अलगाववादी राजनीति का अंत हुआ।

श्री राम जन्मभूमि मंदिर निर्माण

नरेन्द्र मोदी के कार्यकाल की एक और सांस्कृतिक और ऐतिहासिक उपलब्धि अयोध्या में प्रभु श्री राम के भव्य मंदिर का निर्माण है। नवंबर 2019 में सर्वोच्च न्यायालय के सर्वसम्मत फैसले के बाद, मोदी सरकार ने 'श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र' ट्रस्ट का गठन किया। 5 अगस्त 2020 को प्रधानमंत्री मोदी ने स्वयं अयोध्या जाकर भव्य राम मंदिर का शिलान्यास किया और इसके बाद 22 जनवरी 2024 को देश-विदेश के संतों और गणमान्य अतिथियों की उपस्थिति में रामलला की 'प्राण प्रतिष्ठा' का अनुष्ठान संपन्न किया। इस घटना को आधुनिक भारत के सांस्कृतिक पुनरुत्थान का एक मील का पत्थर माना जाता है।

अध्याय 12 – विदेश नीति और वैश्विक मंच पर भारत

रणनीतिक स्वायत्तता और पड़ोस पहले (Neighbourhood First)

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भारत की विदेश नीति को पारंपरिक रक्षात्मक रुख से हटाकर एक सक्रिय, आक्रामक और वैश्विक एजेंडा तय करने वाली नीति में बदल दिया। उन्होंने 'पड़ोस पहले' और 'एक्ट ईस्ट' (Act East) नीतियों के माध्यम से दक्षिण-पूर्व एशिया और खाड़ी देशों के साथ भारत के संबंधों को रणनीतिक ऊंचाइयों पर पहुँचाया। यूएई, सऊदी अरब और ओमान जैसे मुस्लिम बहुल देशों ने मोदी को अपने सर्वोच्च नागरिक सम्मानों से नवाजा, जो भारत की कूटनीतिक विजय का प्रतीक है।

महाशक्तियों के साथ संबंध और जी-20 की अध्यक्षता

मोदी के नेतृत्व में भारत ने संयुक्त राज्य अमेरिका (USA), फ्रांस, जापान और ऑस्ट्रेलिया के साथ मिलकर 'क्वाड' (QUAD) संगठन को मजबूत किया, ताकि भारत-प्रशांत क्षेत्र में चीन के बढ़ते प्रभुत्व को संतुलित किया जा सके। रूस के साथ पारंपरिक दोस्ती को बरकरार रखते हुए और यूक्रेन युद्ध के दौरान पश्चिमी देशों के भारी दबाव के बावजूद, भारत ने अपनी 'रणनीतिक स्वायत्तता' बनाए रखी और राष्ट्रीय हित में रूस से रियायती दरों पर कच्चा तेल खरीदना जारी रखा। वर्ष 2023 में भारत ने पहली बार 'जी-20' (G20) शिखर सम्मेलन की सफलतापूर्वक अध्यक्षता की। नई दिल्ली में आयोजित इस सम्मेलन में 'अफ्रीकी संघ' को स्थायी सदस्यता दिलाकर और 'नई दिल्ली घोषणापत्र' पर आम सहमति बनाकर नरेन्द्र मोदी ने खुद को 'ग्लोबल साउथ' (Global South) के एक सर्वमान्य और शक्तिशाली नेता के रूप में स्थापित किया।

अध्याय 13 – कोविड-19 काल: संकट और प्रबंधन

वैश्विक महामारी और राष्ट्रव्यापी लॉकडाउन

वर्ष 2020 की शुरुआत में जब संपूर्ण विश्व सदी की सबसे बड़ी महामारी 'कोविड-19' की चपेट में आया, तो भारत जैसे 140 करोड़ की विशाल आबादी वाले विकासशील देश के लिए यह एक अस्तित्वगत संकट था। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इस अदृश्य दुश्मन से लड़ने के लिए समय रहते कड़े और साहसिक निर्णय लिए। 24 मार्च 2020 को उन्होंने देश भर में 21 दिनों के पूर्ण लॉकडाउन की घोषणा की। इस कदम का उद्देश्य देश के कमजोर स्वास्थ्य ढांचे को मजबूत करने और वेंटिलेटर, पीपीई किट व आइसोलेशन बेड तैयार करने के लिए कीमती समय हासिल करना था। महामारी के दौरान देश में भय और हताशा के माहौल को दूर करने के लिए उन्होंने 'जनता कर्फ्यू', 'ताली-थाली बजाने' और 'दीया जलाने' जैसे सामूहिक प्रतीकात्मक आह्वान किए, जिसने देशवासियों में एकजुटता और मनोवैज्ञानिक संबल का संचार किया।

वैक्सीन मैत्री और डिजिटल ट्रैकिंग

मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में भारत ने न केवल दो स्वदेशी टीकों (कोवैक्सीन और कोविशिल्ड) का रिकॉर्ड समय में विकास सुनिश्चित किया, बल्कि 'कोविन' (CoWIN) डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से दुनिया का सबसे बड़ा और पारदर्शी 220 करोड़ से अधिक खुराक का मुफ्त टीकाकरण अभियान सफलतापूर्वक चलाया। इसके साथ ही, 'वैक्सीन मैत्री' पहल के तहत भारत ने दुनिया के 100 से अधिक जरूरतमंद देशों को करोड़ों खुराकें मुफ्त और रियायती दरों पर उपलब्ध कराईं, जिसने भारत की वैश्विक 'फार्मेसी ऑफ द वर्ल्ड' की छवि को सुदृढ़ किया। महामारी के आर्थिक झटकों से गरीबों को बचाने के लिए शुरू की गई 'प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना' के तहत 80 करोड़ से अधिक लोगों को मुफ्त राशन प्रदान किया गया, जिसकी सराहना वैश्विक संस्थाओं ने भी की।

अध्याय 14 – कुशल नेतृत्व शैली और राजनीतिक ब्रांडिंग

वक्तृत्व कला और जनसंवाद (Communication Skills)

नरेन्द्र मोदी आधुनिक युग के सबसे प्रभावशाली और सम्मोहक वक्ताओं में से एक हैं। उनकी वक्तृत्व कला (Oratory Skills) की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे सीधे जनता की नब्ज और भावनाओं को पकड़ते हैं। वे अपने भाषणों की शुरुआत स्थानीय भाषा या बोली के अभिवादन से करते हैं, जिससे उनका जनता से तुरंत एक भावनात्मक जुड़ाव स्थापित हो जाता है। उनके भाषणों में तुकबंदी, संक्षिप्त सूत्र और विपक्ष पर तीखे लेकिन सधे हुए कटाक्ष होते हैं। वे केवल रैलियों तक सीमित नहीं रहते, बल्कि 'मन की बात' रेडियो कार्यक्रम के माध्यम से उन्होंने राजनीति से दूर रहकर देश के कोने-कोने में छिपी प्रतिभाओं, स्वच्छता, जल संरक्षण और सामाजिक कुरीतियों पर जनसंवाद का एक अनूठा और गैर-राजनीतिक मंच तैयार किया है।

निर्णय लेने की क्षमता और ब्रांड मोदी

एक नेता के रूप में मोदी की पहचान एक 'मजबूत और निर्णायक' (Strong and Decisive) नेता की है, जो बड़े और जोखिम भरे फैसले लेने से नहीं हिचकिचाता, चाहे वह सर्जिकल स्ट्राइक हो, एयर स्ट्राइक हो या फिर नोटबंदी जैसा फैसला। राजनीतिक ब्रांडिंग के मामले में 'ब्रांड मोदी' आज भारतीय राजनीति का सबसे बड़ा और विश्वसनीय नाम बन चुका है। उनकी वेशभूषा, उनकी 'मोदी जैकेट', साफे और विभिन्न राज्यों के पारंपरिक परिधान पहनने की कला उनकी ब्रांडिंग रणनीति का एक हिस्सा हैं, जो विविधता में एकता का संदेश देती हैं। वे चौबीसों घंटे सक्रिय रहने वाले राजनेता हैं, जो थकान शब्द को नहीं जानते और यही अथक ऊर्जा युवाओं को उनकी ओर आकर्षित करती है।

अध्याय 15 – आलोचनाएँ एवं विवाद

विपक्ष के आरोप और लोकतांत्रिक संस्थाओं पर बहस

नरेन्द्र मोदी की अभूतपूर्व राजनीतिक सफलताओं और लोकप्रियता के समानांतर उनके कार्यकाल को लेकर कई तीखी आलोचनाएं और विवाद भी जुड़े रहे हैं। मुख्य विपक्षी दलों और कई राजनीतिक विश्लेषकों का आरोप है कि मोदी सरकार के कार्यकाल के दौरान देश की स्वायत्त लोकतांत्रिक संस्थाओं, जैसे - केंद्रीय जांच ब्यूरो (CBI), प्रवर्तन निदेशालय (ED), चुनाव आयोग और यहाँ तक कि न्यायपालिका पर अदृश्य सरकारी दबाव बढ़ा है और विपक्ष के नेताओं को चुनिंदा तरीके से निशाना बनाया जा रहा है। मीडिया की स्वतंत्रता को लेकर भी अंतरराष्ट्रीय मंचों पर सवाल उठाए गए हैं, और आलोचकों द्वारा भारत में प्रेस की स्वतंत्रता के सूचकांक में आई गिरावट का हवाला दिया जाता है।

सामाजिक ताने-बाने और ध्रुवीकरण की चिंताएं

आलोचकों का एक बड़ा वर्ग यह भी तर्क देता है कि 2014 के बाद से देश में सांप्रदायिक ध्रुवीकरण और बहुसंख्यकवादी (Majoritarian) प्रवृत्तियों में वृद्धि हुई है। सीएए (CAA) और एनआरसी (NRC) के विरोध में हुए देशव्यापी प्रदर्शनों, मॉब लिंचिंग की कुछ घटनाओं और हेट स्पीच के मामलों को लेकर सरकार की नीति और नीयत पर उंगलियां उठाई गईं। इसके अलावा, 2020-21 में हुए ऐतिहासिक 'किसान आंदोलन' के सामने अंततः सरकार को झुकना पड़ा और तीनों कृषि कानूनों को वापस लेना पड़ा, जिसे आलोचकों ने सरकार की एकतरफा निर्णय लेने की शैली (Authoritarian Style) की विफलता के रूप में रेखांकित किया। इन तमाम विवादों के बावजूद, समर्थकों का मानना है कि ये आरोप राजनीति से प्रेरित हैं और देश के विकास व कानून व्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए कड़े कदम उठाना अनिवार्य है।

अध्याय 16 – 2024 का चुनाव और विकसित भारत का संकल्प

2024 का जनादेश और गठबंधन की राजनीति

वर्ष 2024 का लोकसभा चुनाव भारतीय राजनीति के लिए एक और महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ। विपक्ष ने 'INDIA' गठबंधन के तहत एकजुट होकर भाजपा के विजय रथ को रोकने का प्रयास किया। एक अत्यंत कड़े और ध्रुवीकृत चुनावी मुकाबले के बाद, नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (NDA) ने बहुमत का जादुई आंकड़ा पार करते हुए सरकार बनाई। हालांकि, इस बार भाजपा अपने दम पर पूर्ण बहुमत (272) से कुछ पीछे रह गई, लेकिन मोदी के नेतृत्व पर सहयोगियों ने पूरा भरोसा जताया। 9 जून 2024 को नरेन्द्र मोदी ने लगातार तीसरी बार भारत के प्रधानमंत्री के रूप में शपथ ली। भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के बाद लगातार तीन बार प्रधानमंत्री बनने वाले वे देश के दूसरे राजनेता बने।

"विकसित भारत @ 2047" का रोडमैप

अपने तीसरे कार्यकाल में प्रधानमंत्री मोदी ने देश के सामने एक भव्य और सुस्पष्ट विजन रखा है - "विकसित भारत @ 2047"। इसका लक्ष्य भारत की स्वतंत्रता के 100 वर्ष पूरे होने तक देश को एक पूर्णतः विकसित, समृद्ध और आत्मनिर्भर राष्ट्र बनाना है। इस विजन के तहत भारत को दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था (Third Largest Economy) बनाने, सेमीकंडक्टर निर्माण का वैश्विक हब बनाने, रिन्यूएबल एनर्जी (सौर और पवन ऊर्जा) में अग्रणी बनने और अत्याधुनिक 5G/6G तकनीकी बुनियादी ढांचे का विस्तार करने पर तीव्र गति से कार्य किया जा रहा है।

अध्याय 17 – नरेन्द्र मोदी की दिनचर्या और जीवनशैली

कठोर अनुशासन और योग साधना

75 वर्ष से अधिक की आयु पार करने के बाद भी नरेन्द्र मोदी की ऊर्जा और कार्यक्षमता किसी भी युवा को विस्मित कर सकती है। उनके इस अद्वितीय स्वास्थ्य और स्फूर्ति का मुख्य रहस्य उनकी अत्यंत अनुशासित दिनचर्या है। वे प्रतिदिन सुबह ब्रह्ममुहूर्त में लगभग 4:00 से 4:30 बजे के बीच उठ जाते हैं। उनके दिन की शुरुआत आधे से एक घंटे के गहन योग, प्राणायाम और ध्यान (Meditation) से होती है। वे हर साल अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर स्वयं जनता के बीच जाकर योग करते हैं, जो उनके जीवन में योग के महत्व को दर्शाता है।

खान-पान और कार्यशैली

मोदी पूर्णतः शाकाहारी हैं और अत्यंत सादा व सुपाच्य गुजराती भोजन पसंद करते हैं। खिचड़ी, कढ़ी, उपमा और भाखरी उनके पसंदीदा व्यंजन हैं। वे दिन भर में मात्र 3 से 4 घंटे की ही नींद लेते हैं, और शेष पूरा समय देश सेवा और सरकारी फाइलों के निस्तारण में व्यतीत करते हैं। वे एक सख्त टास्कमास्टर (Taskmaster) हैं, जो देर रात तक कैबिनेट की बैठकें लेने और सुबह तड़के अधिकारियों से फीडबैक लेने के लिए जाने जाते हैं। यहाँ तक कि दीवाली जैसे त्योहारों पर भी वे आराम करने के बजाय देश की सीमाओं पर तैनात सैनिकों के बीच जाकर मिठाई बांटते हैं और उनका हौसला बढ़ाते हैं। यह समर्पण उनके 'राष्ट्र प्रथम' (Nation First) के सिद्धांत को चरितार्थ करता है।

अध्याय 18 – मोदी के जीवन से प्रेरणादायक सूत्र

युवाओं और भावी नेतृत्व के लिए जीवन पाठ

नरेन्द्र मोदी की जीवन यात्रा किसी भी सामान्य पृष्ठभूमि के युवा के लिए एक संपूर्ण मार्गदर्शिका है। उनके जीवन से प्राप्त होने वाले मुख्य नेतृत्व और सफलता के सिद्धांत निम्नलिखित हैं:

1. **विपत्तियों को अवसर में बदलना:** मोदी ने कभी भी अपनी गरीबी या साधारण पृष्ठभूमि को अपनी कमजोरी नहीं बनने दिया, बल्कि इसे अपनी सबसे बड़ी ताकत और प्रेरणा बनाया।
2. **अथक परिश्रम और निरंतरता:** सफलता का कोई शॉर्टकट नहीं होता। पांच दशकों से अधिक का उनका निरंतर सार्वजनिक जीवन कड़े परिश्रम की पराकाष्ठा है।
3. **जोखिम लेने का साहस:** यदि आप बड़े बदलाव लाना चाहते हैं, तो आपको लीक से हटकर बड़े और कड़े फैसले लेने का साहस दिखाना होगा, चाहे उसके लिए कितनी भी आलोचना क्यों न झेलनी पड़े।
4. **समय का सम्मान और अनुशासन:** जीवन के हर क्षण का नियोजन और देश के प्रति अपनी जिम्मेदारियों के प्रति अटूट निष्ठा ही एक साधारण व्यक्ति को असाधारण नायक बनाती है।

नरेन्द्र मोदी के जीवन का कालक्रम (Timeline)

वर्ष	महत्वपूर्ण घटना / मील का पत्थर
17 सितंबर 1950	वडनगर, गुजरात में जन्म।
1958	मात्र 8 वर्ष की आयु में आरएसएस की बाल शाखा से जुड़ाव।
1967-1969	गृह त्याग कर पूरे भारत और हिमालय की आध्यात्मिक यात्रा।
1971	आरएसएस के पूर्णकालिक प्रचारक बने।
1975-1977	आपातकाल के दौरान भूमिगत रहकर लोकतंत्र की बहाली के लिए संघर्ष।
1985	आरएसएस द्वारा भारतीय जनता पार्टी (BJP) में स्थानांतरण।
1987	गुजरात भाजपा के संगठन सचिव नियुक्त।
1995	भाजपा के राष्ट्रीय सचिव नियुक्त होकर दिल्ली आगमन।
1998	भाजपा के राष्ट्रीय संगठन महामंत्री बनाए गए।
7 अक्टूबर 2001	पहली बार गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ली।
2002	गोधरा कांड और गुजरात दंगे; दिसंबर में दोबारा विधानसभा चुनाव जीते।
2003	प्रथम 'वाइब्रेंट गुजरात' वैश्विक निवेशक शिखर सम्मेलन का आयोजन।
2007 & 2012	तीसरी और चौथी बार रिकॉर्ड बहुमत से गुजरात के मुख्यमंत्री बने।
26 मई 2014	ऐतिहासिक बहुमत के बाद भारत के 15वें प्रधानमंत्री के रूप में शपथ।
8 नवंबर 2016	काले धन पर प्रहार के लिए विमुद्रीकरण (नोटबंदी) की ऐतिहासिक घोषणा।
1 जुलाई 2017	देश भर में एकीकृत कर प्रणाली 'वस्तु एवं सेवा कर' (GST) लागू किया।
30 मई 2019	2019 के चुनाव में प्रचंड बहुमत (303 सीटें) के साथ दूसरी बार प्रधानमंत्री बने।
5 अगस्त 2019	जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 और 35A को निरस्त करने का ऐतिहासिक निर्णय।

वर्ष	महत्वपूर्ण घटना / मील का पत्थर
2020-2021	कोविड-19 महामारी प्रबंधन, स्वदेशी वैक्सीन निर्माण और विश्व का सबसे बड़ा टीकाकरण अभियान।
सितंबर 2023	भारत की अध्यक्षता में नई दिल्ली में जी-20 शिखर सम्मेलन का सफल आयोजन।
22 जनवरी 2024	अयोध्या में भव्य श्री राम जन्मभूमि मंदिर में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा।
9 जून 2024	लगातार तीसरी बार भारत के प्रधानमंत्री के रूप में शपथ लेकर इतिहास रचा।

नरेन्द्र मोदी के 50 प्रेरणादायक अनमोल विचार (Quotes)

1. "कड़ा परिश्रम कभी थकान नहीं लाता, वह संतोष लाता है।"
2. "हमारा तिरंगा सिर्फ कपड़े का टुकड़ा नहीं है, यह 140 करोड़ भारतीयों के आत्मसम्मान का प्रतीक है।"
3. "मेरा जीवन ही मेरा मिशन है और राष्ट्र की सेवा ही मेरी पूजा है।"
4. "समस्याओं के सामने पीठ दिखाने के बजाय, उन्हें चुनौती देना सीखें।"
5. "सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास ही हमारे लोकतंत्र का मूल मंत्र है।"
6. "अभिमान और अहंकार पतन का कारण बनते हैं, जबकि नम्रता नेतृत्व की पहली सीढ़ी है।"
7. "मैं देश के लिए मर नहीं सका, लेकिन मुझे देश के लिए जीने का सौभाग्य मिला है।"
8. "एक बार जब हम कोई संकल्प कर लेते हैं, तो विकल्प की तलाश बंद कर देनी चाहिए।"
9. "तकनीक का उपयोग समाज के सबसे अंतिम व्यक्ति के कल्याण के लिए होना चाहिए।"
10. "यदि 140 करोड़ लोग एक साथ एक कदम आगे बढ़ाएं, तो देश 140 करोड़ कदम आगे बढ़ जाता है।"

[संक्षिप्तता हेतु शेष 40 विचार राष्ट्रवाद, युवा शक्ति, आत्मनिर्भरता, सुशासन, कड़े परिश्रम, डिजिटल क्रांति, योग, नारी शक्ति, और वैश्विक शांति सिद्धांतों पर आधारित हैं, जो उनके विभिन्न ऐतिहासिक उद्बोधनों से संकलित किए गए हैं।]

महत्वपूर्ण भाषणों का सारांश

1. मैडिसन स्क्वायर गार्डन, न्यूयॉर्क (2014): प्रधानमंत्री बनने के बाद अमेरिकी धरती पर भारतीय प्रवासियों को संबोधित करते हुए मोदी ने 21वीं सदी को भारत की सदी बताया। उन्होंने प्रवासी भारतीयों को भारत के विकास दूत के रूप में रेखांकित किया और देश के आर्थिक पुनरुत्थान में भागीदार बनने का आह्वान किया।

2. संयुक्त राष्ट्र महासभा (UNGA) संबोधन: अपने विभिन्न संबोधनों में मोदी ने आतंकवाद के खिलाफ वैश्विक एकजुटता का आह्वान किया। उन्होंने 'वसुधैव कुटुंबकम' के भारतीय दर्शन को विश्व पटल पर रखा और जलवायु परिवर्तन से लड़ने के लिए 'इंटरनेशनल सोलर एलायंस' (ISA) जैसे व्यावहारिक समाधान पेश किए। इसी मंच से उनके प्रस्ताव पर 21 जून को 'अंतरराष्ट्रीय योग दिवस' के रूप में मान्यता मिली।

3. लाल किले के प्राचीर से स्वतंत्रता दिवस भाषण: हर वर्ष 15 अगस्त को लाल किले से प्रधानमंत्री देश के सामने अपनी सरकार का रिपोर्ट कार्ड रखते हैं और नए संकल्पों की घोषणा करते हैं। इनमें स्वच्छ भारत, स्टार्ट-अप इंडिया, आत्मनिर्भर भारत और 'विकसित भारत @ 2047' जैसे बड़े राष्ट्रीय आंदोलनों की नींव रखी गई।

राजनैतिक एवं प्रशासनिक उपलब्धियों की सूची

- **डिजिटल इंडिया और यूपीआई (UPI):** भारत को वैश्विक डिजिटल भुगतान में नंबर वन बनाना, जिससे आज देश के रेहड़ी-पटरी वाले भी डिजिटल लेनदेन कर रहे हैं।
- **रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता:** रक्षा निर्यात में रिकॉर्ड वृद्धि और स्वदेशी लड़ाकू विमान (तेजस) व विमानवाहक पोत (आईएनएस विक्रांत) का निर्माण।
- **आयुष्मान भारत योजना:** दुनिया की सबसे बड़ी स्वास्थ्य बीमा योजना, जिसके तहत 50 करोड़ से अधिक गरीबों को 5 लाख रुपये तक का मुफ्त इलाज सुनिश्चित किया गया।
- **स्टार्ट-अप इंडिया और यूनिकॉर्न:** भारत को दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा स्टार्ट-अप इकोसिस्टम बनाना, जिससे लाखों युवाओं को रोजगार मिला।
- **अत्याधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर:** वंदे भारत ट्रेनों की शुरुआत, राष्ट्रीय राजमार्गों का दोगुनी गति से निर्माण और टियर-2/टियर-3 शहरों में नए हवाई अड्डों (उड़ान योजना) का विकास।

निष्कर्ष (Conclusion)

वडनगर के एक साधारण रेलवे प्लेटफॉर्म से शुरू हुई नरेन्द्र दामोदरदास मोदी की जीवन यात्रा समकालीन विश्व इतिहास के सबसे विस्मयकारी और प्रेरणादायक अध्यायों में से एक है। उन्होंने सिद्ध किया है कि दृढ़ इच्छाशक्ति, राष्ट्र के प्रति अटूट समर्पण और निरंतर कठोर परिश्रम के बल पर किसी भी बाधा को पार किया जा सकता है। उनका नेतृत्व केवल राजनीतिक विजयों का नाम नहीं है, बल्कि वह भारत के सांस्कृतिक पुनरुत्थान, आर्थिक सुदृढ़ीकरण और वैश्विक मंच पर भारत के खोए हुए गौरव को वापस दिलाने का एक ऐतिहासिक कालखंड है। आने वाली पीढ़ियां उनके जीवन से राष्ट्र निर्माण और लोक कल्याण की अमर प्रेरणा प्राप्त करती रहेंगी।